॥ गुरुवन्दना ॥

जय सदगुरु देवन देव वरं,निज भक्तन रक्षण देह धरं ।
पर दुःख हरं सुख शातिं करं, निरुपाधि निरामय दिव्य परं ॥

जय काल अबाधित शांतिमयं, जन पोषक शोषक ताप त्रयं ।
भय भंजन देत परम अभयं, मन रंजन भाविक भाव प्रियं ॥

ममतादिक दोष नशावत हैं, शम आदिक भाव सिखावत हैं ।
जग जीवन पाप निवारत हैं, भव सागर पार उतारत हैं ॥

कहुं धर्म बतावत ध्यान कहीं, कहुं भक्ति सिखावत ज्ञान कही ।
उपदेशत नेम अरु प्रेम तुम्हीं, करते प्रभु योग अरु क्षेम तुम्हीं ॥

मन इन्द्रिय जाही न जान सके, नहीं बुद्दि जिसे पहचान सके।
नहीं शब्द जहां पर जाय सके, बिनु सदगुरु कौन लखाय सके ॥

नहीं ध्यान न ध्यातृ न ध्येय जहां, नहीं ज्ञातृ न ज्ञान न ज्ञेय जहां ।
नहीं देश न काल न वस्तु तहां, बिनु सदगुरु को पहुंचाय वहां ॥

नहीं रूप न लक्षन ही जिसका, नहीं नाम न धाम कहीं जिसका ।
नहीं सत्य असत्य कहाय सके, गुरुदेव ही ताहि जनाय सके॥

गुरु कीन कृपा भव त्रास गई, मिट भूख गई छूट प्यास गई ।
नहीं काम रहा नहीं कर्म रहा, नहीं मृत्यु रहा नहीं जन्म रहा ॥

भग राग गया हट द्वेष गया, अध चूर्ण भया अणु पूर्ण भया ।
नहीं द्वैत रहा सम एक भया, भ्रम भेद मिटा मम तोर गया ॥

नहीं मैं नहीं तू नहीं–अन्य रहा, गुरु शाश्वत आप अनन्य रहा ।
गुरु सेवत ते नर धन्य यहां, तिनकुं नहीं दुःख यहां न वहां ॥